चतुर्थ अध्याय

नयी कविता और दुष्यंतकुमार

नयी कविता और दुष्यंतकुमार

कविता युग के अनुसार अवतरित होती है और अपने काल के साहित्य को नाम से उद्‌बोधित करती है । लेकिन "नयी कविता को दिया गया यह नाम संभ्रम में डालनेवाला है । जब छायावाद नाम अस्तित्व में नही था तब तक की कविताओं को भी नयी कविता नाम से ही जाना जाता था । साथ ही इसे प्रगतिशील, प्रयोगशील, प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद, अकविता, साठोतरी कविता, अस्वीकृत कविता आदि नामों से भी जाना जाता था । अत: डॉ. रवींद्र भ्रमर के अनुसार "नयी कविता" का प्रारंभ सन् १९५२ से माना जाता है । उन्होंने उसे प्रयोगवाद की ही स्वाभाविक परिणाति बताया है । उनके अनुसार, "नयी कविता अर्थात प्रयोगवाद के उपरांत लगभग १९५२ से किसी वर्गगत अथवा दलगत आग्रास से परे एक स्वतंत्र रचना भूमिपर प्रभावित नुतन भावधारा ।" [१] इसके अलावा डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार - "सन् १९५४ में इलाहाबाद से "नई कविता" का प्रकाशन हुआ और यहीं से नयी कविता और अज्ञेय की "प्रयोगवादी" कविता में अलगाव का दावा किया जाने लगा ।" [२] इसतरह "नयी कविता" के काल निर्धारण के बारे में अनेक मतभेद नजर आते है । मगर इसका प्रचलन सन् १९५४ से माना जाता है ।

"नयी कविता" को प्रयोगवाद का परवर्ति विकास भी माना गया है । "नयी कविता" किसी भी वाद के बंधन में नहीं रहना चाहती थी । अत: इसतरह बंधन मुक्त कविता के क्षेत्र को अनेक नये प्रतिभावान कवियों ने अपनाया ।

---

१) आधुनिक हिन्दी कविता के चार दशक - डॉ. रा.तु. भगत । डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र, पृ. ३०५.

२) - वही - पृ. ३०५.

और वे साहित्य जगत में अवतरित हुए । ऐसे प्रतिभावान कवियों के कारण ही ये काव्यधारा नवीनता, विशिष्टता और मौलिकता से ओत प्रोत है । इसतरह के साहित्य के इतिहास के बारे में जानना भी आवश्यक है ।

राजनीतिक स्थिति :

राजनीतिक अंतर्द्वंद्व के कारण "नयी कविता" का अविर्भाव हुआ । इसका महत्वपूर्ण घटक द्वितीय महायुध्द है । इस समय राजनीति को युरोप के पिंजरे में कैद कर दिया था । पाश्चिमात्यों के हाथ के खिलौनें बन बैठे थे यहाँ के राजनीतिज्ञ । अलग-अलग संम्मलनों द्वारा संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया जा रहा था । साम्यवादी और मानव विरोधी घटनाएँ घटी । ईश्वर से लोगों का विश्वास उठ गया । परिणामत: आध्यात्मिकता को भी हानि पहुँची । हर कार्य वैज्ञानिक दृष्टि से किया जाने लगा । संपूर्ण विश्व का सूत्रधार इंग्लैड रहा । हर देश का तख्त वहाँ से चलाया जाने लगा । लेकिन इस समय भारतीय राजनीति के नेता महात्मा गांधी थे । दूसरे महायुध्द में भारत को शामिल करनेकी इच्छा उस समय के वाइसराय को थी । लेकिन महात्मा गांधी ने इस की जड़ पकड़कर कुछ प्रस्ताव वाइसराय के सामने रखे । परिणामत: काँग्रेस में विवाद पैदा हुआ । वाइसराय ने नेताओं को गिरफ्तार करना शुरु किया । जनता द्वारा चलाये जानेवाले आंदोलनों को दमित किया जाने लगा । खुले आम विद्रोह होने लगा । परिणामत: १५ आगस्त १९४७ को भारत को स्वतंत्रता मिली । अंग्रेज तो चले गये लेकिन उनकी संसद प्रणाली, भाषा, प्रशासन का ढाँचा, कानून, चिकित्सा, अर्थ व्यवस्था आदि के हम गुलाम रहे । गोरे शासक तो चले गये, लेकिन उनकी जगह काले शासक आ गये । लेकिन इस शासक में अनुभव की कमी और

स्वार्थपरता थी । भारत के शासक में पद लोलुपता का षड़यंत्र चलता रहा । शासकों का स्वार्थ, अधिकारीयों के भ्रष्टाचार सामाजिक जीवन नहीं बदल सका । इसका कारण राजनैतिक धोरण, पक्षपात, घूसखोरी आदि रहे । परिणामत: "नयी कविता" को भी इन विषयों के लेकर अवतरित होना पड़ा।

सामाजिक स्थिति :

देश में स्वतंत्रता आंदोलन को जोर आया था । एक प्रकार का उत्साह जनता में भरा हुआ था । स्वतंत्रता मिलने से पहले देश की जनता ने अनेक सपने देखे थे । स्वतंत्रता का स्वागत बडी शानदार पध्दति से किया गया । अंग्रेज तो चले गये लेकिन उनकी अंग्रेजी भाषा यहाँ रह गयी । अंग्रेजी जाननेवालों ने देश की जड़े - वेद, भाषाविज्ञान, इतिहास आदि को पकड़कर चलने लगे । उन्होंने अंग्रेजी को ही शिक्षा का साधन बनाया । शहरों और गाँवों में स्कूल खुलने लगे । नौकरियों के लिए शिक्षार्थी भागने लगे । नौकरियों के लिए पक्षपात होने लगा । शिक्षा के नाम पर धर्म और अर्थ की प्राप्ति की जाने लगी । जनता ने स्वतंत्रता पूर्व देखें स्वप्न भंग होने लगे । हरएक व्यक्ति अपना अधिकार जमाने की कोशिश करने लगा । साधारण जनता की स्थिति में गिरावट आयी । जिससे काला बाजार को बढ़ावा मिला । लोगों की खुशियाँ - अनास्था और निराशा में बदलने लगी । समाज में सुधार की अपेक्षा विवशताएँ पैदा हुई । कई समस्याएँ अपना मुँह खोलने लगी । जिसके कारण स्वातंत्र्य पूर्व लोगों की छटपटाहट - कुंठा एवं आक्रोश में बदल गयी । समाज में वर्ग भेद निर्माण हुए । उनमें संघर्ष होने लगे । इसतरह के समाज के बदलते रूप के साथ-साथ साहित्य को अपने तेवर बदलने पड़े । और इस समय का साहित्य भी इन विषयों को लेकर उपस्थित हुआ ।

- -

साहित्यिक स्थिति(प्रभाव) :

इस समय प्रगतिवाद कुछ मंद सा पड़ा था । और प्रगतिवादी अपनी गति रुक बैठे थे । हिन्दी कविता की गतिशिलता में बाधाएँ उत्पन्न हुई थी । ऐसी स्थिति में प्रगतिवादी कवियों में से वे कवि ही काव्य रचना करने लगे, जो किसी "वाद" में फँसे नहीं थे । उन्होंने अपनी काव्य रचनाएँ सामाजिक दुर्दशा, भ्रष्टाचार, अनीति, जीर्ण रूढ़ियों, परंपराओं आदि विषयों को लेकर करने लगे । दूसरी ओर प्रगतिवादी अपने को जनजीवनसे अलग महसूस करने लगे थे । इसकारण मध्यवर्गीय लोगों की निराशा को उन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया । वैयक्तिक चेतना को, सामाजिक समस्याओं को अपने काव्य का विषय बनाया । काव्य संक्लनों के स्वतंत्र संक्लन प्रकाशित किये जाने लगे । अत: इस समय के साहित्यिकों में आपसी वाद-विवाद को बढ़ावा मिला । इसतरह "नयी कविता" के कवियों ने साहित्यिक परिवर्तनों, प्रभावों को ग्रहण करके उन्हें अपना रचना विषय बनाया ।

पाश्चात्य प्रभाव (साहित्यिक) :

सन १९५० में प्रयोगवादी कवि अपनी कविता को "नई कविता" के नाम से पुकारने लगे थे । लूई, मैक्नीस, ऑडेन, स्पैंडर आदि अंग्रेजी के कुछ कवियों ने "न्यू पोएट्री" नामक आंदोलन चलाया था । उसी का हिन्दी संस्करण "नयी कविता" हैं ।" [१]– डॉ. लक्ष्मीसागर वर्ष्णेय का यह मत है । इसतरह कुछ आलोचकों के अनुसार, "नयी कविता" पाश्चात्य, विदेशी

---

१) आधुनिक हिन्दी कविता के चार दशक – डॉ. रा.तु. भगत । डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र, पृ. ३०७.

काव्य का अनुकरण है । लेकिन कुछ आलोचक इसे मानते नहीं है । राष्ट्र-कवि दिनकर के अनुसार, "हिन्दी में जो कुछ हो रहा है उसे एलियट आदि अंग्रेजी कवियों का अंधानुकरण नहीं कहना चाहिए । अनुकरण का काम दो-चार या दस आदमी कर सकते हैं । पूरी की पूरी पीढ़ी अनुकरण के रोगों से ग्रसित हो ऐसा मानने का कोई ठोस आधार नहीं है । मेरा अनुमान है कि, जिन अवस्थाओंने इंग्लैंड में नये कवियों का उत्पन्न किया उनसे मिलती जुलती अवस्थाएँ अपने यहाँ के बुध्दिजीवियों को भी अनुभूत होने लगी है, इस-लिए उनमें और युरोपीय कवियों में थोड़ा बहुत साम्य दिखलाई दे रहा है ।"[१] अत: इसतरह वर्तमान युग में हर क्षेत्र पाश्चात्य का अनुकरण करता आ रहा है । उसी तरह नयी कविता ने भी पाश्चात्य काव्य क्षेत्र से कुछ नये तथा प्रेरक तत्व ग्रहण किये, मगर उनकी जड़े हमारे देश में काफी गहराई तक पहुँच चुकी है । अनुकरण तो शिल्प के क्षेत्र में किया जा सकता है, विषय के क्षेत्र में नहीं । अत: नयी कविता की प्रारंभिक कुछ रचनाओं में विषय का भी अनुकरण हुआ-सा नजर आता है । मगर बाद में उनकी कमी महसूस की जाने लगी । अत: इस काव्यधारा के कवियों पर पाश्चात्य वादों का भी प्रभाव स्पष्ट नजर आता है । इनमें से "मार्क्स का भौतिकवाद बादलेयर-रिम्बो का प्रतीकवाद, जोला पलायबेयर का प्रकृतवाद, हापकिन्स-पाउड का बिंबवाद, तथा इलियट का अभिजात्यवाद और क्रोये का अभिव्यंजनावाद स्पष्ट झलते हैं । इसके अलावा अमरिका के क्यूमिंग्ज, वाल्टव्हिए मैन की रचना शैली, चीनी टंका, जापानी हायकू, आदि कविताओं की नक्ल भी है । लेकिन अज्ञेय इसे अनुकरण नहीं मानते, इसे एक प्रकार की चेतना मानते है ।" [२]

इसतरह के पाश्चात्य तथा भारतीय साहित्यिक प्रभावों ग्रहण करके लिखीं नयी कविता की भाषा में लक्षणियता और ध्वन्यात्मकता स्पष्ट झलकती है । शब्दों के अर्थ और लय की ओर कवियोंका अधिक ध्यान नजर आता है ।

---

१) आधुनिक हिन्दी कविता के चार दशक - डॉ. रा.तु.भगत । डॉ.सरजू प्रसाद मिश्र, पृ. ३०७.
२) नयी कविता-रचना प्रक्रिया- डॉ.ओमप्रकाश अवस्थी, पृ.१०६.

इसी वजह से काव्य भाषा में कलात्मक सौंदर्य भर पड़ा है । इसके अलावा "नयी कविता" की सबसे बडी उपलब्धि यह है कि, ये कविता किसी भी वाद तथा अन्य किसी भी बंधन में जकड़ी नहीं रही है । इसी कारण कविता का स्वरूप ही बदल गया । निराला द्वारा अपनाये गये "मुक्त छंद" को लेकर कविताएँ लिखी जाने लगी । इसतरह कुछ भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यिक प्रभाव, कुछ सामाजिक और कुछ राजनीतिक प्रभाव "नयी कविता" में स्पष्ट नजर आते है । इनका सिर्फ अनुकरण नहीं किया गया है बल्कि इसकी मौलिकता को लेकर "नयी कविता" उपस्थित हुई है । जो समय के अनुकूल प्रतीत होता है । अत: इसतरह हिन्दी साहित्य में "नयी कविता" का अविर्भाव हुआ ।

इसतरह हिन्दी साहित्य में अवतरित हुई नवी कविता की कुछ विशेष-ताएँ या प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती है। जो निम्न लिखीत है —

(१) नये मनुष्य की प्रतिष्ठा :

"नयी कविता" के कवियों के अनुसार "नयी" या "नया" शब्द इस कविता के लिए सार्थक शब्द है क्योंकि इसमें नये मनुष्य की प्रतिष्ठा करने का उद्‌देश्य है । यह नया मनुष्य रूढ़िगत चेतना से मुक्त, मानव मूल्यों के प्रति सजग, सामाजिक दायित्व को अनुभव करनेवाला, समाज को मानवता की दृष्टि से देखनेवाला स्वार्थ भावना से विरक्त, सह-अनुभूति से युक्त, मनुष्य जाति में भेद न माननेवाला मनुष्य को उपेक्षित बनानेवाली शक्ति के विरोध में विद्रोह करनेवाला, स्वाभिमान जतानेवाला, मनुष्य जाति के प्रति आस्थावान, सत्य-

- -

निष्ठ तथा विवेक संपन्न होगा । यह नये कवियों का कल्पना तत्व हो सकता है । मगर इसका इन्कार नहीं किया जा सकता । उन्हें ऐसे मनुष्य की कमी महसूस होने लगी थीं । इसकारण उन्होंने ऐसे मनुष्य को बनाने के प्रयास अपनी कविताओं के माध्यम से किये । उन्हें इस मनुष्य में सामाजिक परिस्थितीयों से जुझाने की शक्ति निर्माण करनी है । ऐसी शक्तिवाले इन्सान को वे देवत्व के रूप में देखने के अभिलाषी हैं । उनकी ये अभिलाषाएँ "नयी कविताओं" में देखनें को मिलती है । मगर आलोचकों ने इस तरह के व्यक्तित्व को "लघु मानव" नाम से पुकारा है । वे ऐसे व्यक्तित्व को नगण्य एवं तुच्छ मानते हुए यह कहते है कि, नये कवियों को अपनी दृष्टि व्यापक बनानी चाहिए । आलोचकों की दृष्टि से इन कवियों ने मनुष्य को नगण्य, तुच्छ और छोटा बना दिया है । मगर यह लघुता वास्तविक नहीं है । लेकिन मानव की गरिमा को खंडित करके उसे प्रतिष्ठापित करती है । अत: इसतरह मानव लघुता के प्रति व्यंग्य करके उसकी लघुता के महत्ता सिध्द करती है ।

(२) यथार्थ से द्रवित व्यंग्यात्मक दृष्टि :

नयीकविता में आधुनिक यथार्थ से द्रवित व्यंग्यात्मक दृष्टि भी नजर आती है । जिसमें वर्तमान कटूताओं और विषमताओं के प्रति कवि की व्यंग्यपूर्ण भावनाएँ, व्यक्त हुई है । ऐसी प्रवृति को कवि रामस्वरूप चतुर्वेदी ने एक मौलिक प्रवृत्ति कहा है । लक्ष्मीकांत वर्मा आज की कविता के लिए व्यंग्य को अनिवार्य मानते हैं । नयी कविता में ऐसा ही यथार्थ पर किया गया व्यंग्य नजर आता है । इन कविताओं में हर दिन टूटी मानवीय शक्तियों और आस्थाओं के प्रति पीड़ा को अभिव्यक्ति है, कहीं विश्वमानव पर लगी

विसंगतियों पर प्रहार, कहीं मानव को असहाय्य और करुणा पर व्यंग्य । कुछ जगहों पर व्यवस्था में पिसे जानेवाले मनुष्य के प्रति सहानुभूति है । इसमें युग के बदले हुए स्वभाव, रुचियों, और मानव मूल्यों को नष्ट करने, उन्हें विघटित करनेवाले के प्रति करुणायुक्त व्यंग्य है । इसतरह के व्यंग्य में से मानवीय दुर्बलता, सामाजिक एवं राजनीतिक बुराईयों के प्रति, पेचिदगियों और असहायता के प्रति करुणा का भाव व्यक्त होता है । इन बातों को प्रस्तुत करके "नयी कविता" ने मानवीय उदात्तता को स्वीकार करने का प्रमाण प्रस्तुत किया है ।

(३) युगजीवन का साक्षात्कार :

"नयी कविता" के कविने युग के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोन अपनाया है । इसतरह "नयी कविता" में अपनाये गये यथार्थवाद पर मार्क्सवाद और फ्रायड़वाद का प्रभाव रहा हैं । मगर यथार्थवाद का यह दृष्टिकोन अतिवादिता से भरा हुआ नजर आता है । लेकिन अतिवादिता से बचकर नये कवियोंने जीवन के यथार्थ के प्रति समग्र दृष्टि अपनाने का प्रयास किया है । नयी कविता की भाव भूमि विस्तृत हैं । उसमें कल्पना को नहीं अनुभव को और भावुक्ता को नहीं बल्कि विवेक को अपनाया गया है । संवेदनशील मन का यथार्थ ही इसका काव्य रूप रहा है । यथार्थ को असुंदर माननेवाले कवि की कविताएँ इस धारा में संम्मिलित नहीं हो सकी । क्यों कि नयी कविता का सौंदर्य यथार्थ की धरातल पर अंकित किया हुआ है । इसधारा की कविताओं में मध्यवर्गीय समाज का वर्णन यथार्थ रूप में मिलता है । अत: इसतरह के वर्णन को अभिव्यक्ति की सादगी ही स्पष्ट करती है । इसके साथ ही मानव जाति के लिए खतरा बनी विज्ञान की प्रगति का विडंबनापूर्ण अंकण भी इन कविताओं में मिलता है । इसतरह जीवन के सभी क्षेत्र का यथार्थ दर्शन "नयी कविता" में स्पष्ट रूप में होता है ।

सरस रोमानी अअनुभूतियाँ :

यथार्थ के कारण ऐसा लगता है कि नये कवियों ने रोमांस से अपना मुख मोड लिया होगा । लेकिन स्थिति इसके विपरित नजर आती है । नये कवियों ने अपनी रचनाओं में सरस रोमानी अनुभूतियों को बड़ी मात्रा में अंकित किया है । लेकिन ऐसा वर्णन करते समय नये कवियों ने मौलिकता, ताजगी और अनुभूति को यथार्थ रूप को कम नहीं होने दिया है । इसतरह के रोमानी अनुभूतियों के वर्णन करते समय प्रतीकों का सहारा लिया गया हैं । उन्होंने प्रेमानुभूति और सौंदर्य का भी अंकन बड़ी सहजता से अपनी कविता ओं में किया है । इसतरह नयी कविता में सरस रोमानी अनुभूतियों को अंकित किया गया है ।

अहंवाद, क्षणवाद, कुंठावाद :

"नयी कविता" के प्रवृतियोंकेअध्ययन में व्यक्तिवाद, अहंवाद, एवं कुंठावाद का भी विवेचन होना चाहिए । नयी कविता के प्रवृत्तियों में इन सब को तो स्थान मिला है । क्योंकि पहले देखें गये प्रवृत्तियोंसेयह स्पष्ट होता है कि, नयी कविता का कवि आत्म-प्रतिष्ठा, स्वाभिमान तथा स्व-निर्णय अभिलाषी है । इसका मतलब यह नहीं कि, नयी कविता अहंवादी है । इसमें चित्रित अहंवाद स्वाभिमान तथा स्वतंत्र निर्णय लेनेवाले विवेक का परिचायक है । नयी कविता की आलोचना करते समय "भोग गये सार्थक क्षणों की अभिव्यक्ति की बात को स्पष्ट किया जाता है । लेकिन क्षण की यह अभिव्यक्ति क्षण-वाद तथा क्षणभंगुरता के रूप में नहीं अवतरित हुई है । किंतु इसके माध्यम से काल के संक्षिप्त लेकिन उसमें की गयी तीव्रानुभूति की ओर संकेत किया गया है ।

- -

जिसके कारण रचना में सशक्तता भरी हुई है । नये कवियों ने जीवन प्रवाह में यथार्थ रूप में अनुभूति को मूल्यवान बनानेवाले क्षणों का ही चित्रण किया है, जिसमें वास्तविकता नजर आती है । इसतरह "नयी कविता" में अहंवाद, क्षणवाद, कुंठावाद का चित्रण मिलता है ।

प्रकृति-चित्रण की नवीनता :

नयी कविता में प्रकृति चित्रण का चित्रण बड़ी मात्रा में किया हुआ नजर आता है । प्रकृति के विभिन्न रूपों की विभिन्न तरिकों से अभिव्यक्ति की गयी है । नये कवियोंने अपनी रचनाओं में प्रकृति का सहज और मार्मिक चित्रण किया है । प्रकृति के हर पहलू याने खेत, नदी, पर्वत, शहर, गाँव का चित्रण व्यापक रूप में मिलते है । प्रकृति चित्रण में ग्रामीण और शहरी दोनों रूप मिलते है । उन्होंने प्रकृति को माध्यम बनाकर अपनी मन:-स्थिति को प्रत्यक्ष रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया है । इसलिए उन्होंने बिंब और प्रतीक का सहारा बड़ी मात्रा में लिया है । इन माध्यमों को अपनाकर किये गये प्रकृति-चित्रण में नये कवियों को सफलता भी मिली है । कुछ जगहों पर प्रकृति को निराशा रूप में भी चित्रित किया गया है । इसका उपयोग उन्होंने अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए किया है । इसतरह नयी कविता के कवियों ने प्रकृति चित्रण में अपनी कलात्मकता को प्रस्तुत किया है ।

रचना-शिल्प :

"नयी कविता" के शिल्पविधान को अनेक विशेषण प्रदान किये गये है । आलोचकों के अनुसार नयी कविता का शिल्प पाश्चीमात्य काव्य शिल्प

का अनुकरण है । शिल्प के क्षेत्र में तो नयी कविता ने अनुकरण किया है । नयी कविता का शिल्प परंपरा का विरोधी रहा है । इसमें रुढ़िगत आदर्शों और सिध्दांतो का पालन नहीं किया गया है । साथ ही रुढ़िगत भाषा, रस, छंद और अलंकारों आदि का भी प्रयोग नहीं किया है । नये कवियों ने शिल्प के नये-नये रूप अपनाये है । काव्य की श्रेष्ठता कविता में अंकित परिवेश को अनुभूति की धरातल पर किस रूप में अंकित किया गया है इसपर अवलंबित रहती है । अत: शिल्प की प्रवृतियों पर भी नजर डालना हमारा कर्तव्य होगा ।

सह-अनुभूति :

साधारणीकरण को नये कवियोंने कविता का मापदंड नहीं स्वीकारा है । क्योंकि रसानुभूति के संबंध में उनकी धारणा बदली हुई है । साधारणीकरण को "सह-अनुभूति" के बलपर हल करने पर जोर दिया गया है । अत: सह-अनुभूति के लिए पाठक को कवि के धरातल पर स्थित होना पड़ेगा ।

नूतन छंद-विधान :

तुक, छंद और लय को "नयी कविता" में देखकर आलोचकों ने इसे गद्य का रूप माना है । लेकिन नये कवि तुक जोड़ने और कविता रचने में मौलिकता मानते है । तुकबंदी की अपेक्षा अनुभूतियों की तीव्रता कविता के लिए आवश्यक है । रुढ़िगत, परंपरा से चले आये छंदों को नये कवि ने त्याग दिया है । और उसकी जगह नूतन छंदों को अपनाया है । निराला द्वारा चलाया गया छंद का आंदोलन नये कवियों ने आगे बढ़ाया और मुक्त छंद को ही अपने काव्य के लिए

- -